International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 29-04-2023, Accepted: 14-05-2023, Published: 30-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 91-93

21वीं सदी में आसियान में भारत की भूमिका

डॉ. अखिलेश पाल[1], मनोज कुमार[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत–आसियान सम्बन्धों की शुरूआत 1992 में हुई थी। जब भारत नें आसियान के साथ व्यापार और आर्थिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए 'लुक ईस्ट पॉलिसी' की शुरूआत की। बाद में यह नीति 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में बदल गई जिसमें भारत ने आसियान के साथ अपने सम्बन्धों को और भी गहराई तक विस्तारित किया। भारत–आसियान सम्बन्ध भारतीय विदेशी नीतिका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका उद्देश्य भारत और आसियान के बीच सशक्त व दोस्ताना सम्बन्धों को प्रोत्साहित करना है। जिससे क्षेत्रीय विकास और भारत विदेशी नीति में मजबूती आये।

मूल शब्द: भारत, जी–20, दक्षिण–पूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया, हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र, आसियान, आर्थिक वृद्धि, सुरक्षा, सहयोग

आसियान की स्थापना 8 अगस्त, 1967 को 'बैंकाक घोषणा' के द्वारा हुई। आरम्भ में 5 देशों का संगठन था जिसमें इंडोनिशया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड शामिल थे। उस दौर में वियतनाम समस्याग्रस्त था तथा कंबोडिया, लाओस एवं वर्मा में राजनैतिक समस्याएं मौजूद थी।[1] ऐसे में ये देश एकजुट होकर एक प्रकार की नीतियों के आधार पर अपने हितों को बचाए रखने का प्रयास कर रहे थे। शीतयुद्धोत्तर विश्व में इस संगठन का मुख्यालय जकार्ता में स्थित है। इस संगठन के आरम्भिक उद्देश्य में वस्तुतः मुक्त व्यापार की नीतियों को आधार बनाकर आर्थिक विकास हासिल करना शामिल था। यह माना गया कि एक समान नीतियों के आधार पर सबके जरूरतों की पूर्ति होगी। एक जैसी समस्या से ग्रस्त होने के कारण सभी देश एक–दूसरे की मदद में सक्षम होंगे और आपसी सहयोग का सबको लाभ होगा।

आसियान अपनी स्थापना के आरंभिक दौर में तो कुछ खास हासिल न कर सका किन्तु वियतनाम संकट समाप्त होने के बाद इसका तेज विकास होता गया। 80 के दशक में इसने अभूतपूर्व प्रगति हासिल की एवं यह संगठन एशिया प्रशांत क्षेत्र के विकास का इंजन साबित हुआ। 90 के दशक में यह एक मजबूत आर्थिक संगठन के रूप में विश्व में उभरा। किन्तु 1997 के आस–पास यह क्षेत्र एक वित्तीय संकट से गुजरा इससे उबरने का प्रयास आरम्भ हुए एवं वर्ष 2001 तक आशियान इस समस्या से बाहर निकल चुका था। वर्ष 2000 में आशियान + 3 की संरचना बनी तथा चीन, जापान एवं दक्षिण कोरिया को इसमें शामिल किया गया। आसियान भारत के साथ मुक्त व्यापार का लाभ बाँटना चाहता है एवं इस सम्बन्ध में भारत तथा आसियान के बीच समझौता हो चुका है।

अध्ययन पद्धति

शोध पत्र को व्यापक एवं प्रभावी बनाने हेतु तथा इसके उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक शोध प्रविधि आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुये ऐतिहासिक, वर्णनात्मक विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र की गुणवत्ता तथा प्रासंगिकता के लिए प्राथमिक व द्वितीय डाटा का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही समाचार पत्रों, शोध पत्र, अर्टिकल्स आदि का भी सहारा लिया गया है।

आसियान–भारत

''एक समय ऐसा भी रहा कि स्वयं दक्षिण–पूर्व एशिया के देश आन्तरिक राजनीतिक दबावों के कारण अत्यंत व्यस्त रहे। इनमें से किसी के लिए भी उभयपक्षीय कसौटी पर भारत के साथ सम्बन्ध प्राथमिकता वाले नहीं थे। मलेशिया और सिंगापुर आपसी सम्बन्धों के सामान्यीकरण में व्यस्त रहे तो कम्यूचिया में 1970 में हिंसनुक की तख्तापलट के साथ वंशनाशक आत्मघाती गृह युद्ध के आरम्भ ने हिन्द चीन के भविष्य पर कई प्रश्न चिन्ह लगा दिये। वियतनाम में गृहयुद्ध की समाप्ति और पुर्नएकीकरण से भी स्थित सहज एवं स्थिर नहीं हुई क्योंकि वियतनाम चीन सम्बन्धों में तनाव बढ़ने के साथ एक 'एक सीमित शीत' युद्ध इस क्षेत्र में सतह पर उभर आया। म्यांमार ने तो 1962 से ही अपनी अलग एकांतवासी राह चुन ली थी। इस दौर से ही जापान और आस्ट्रेलिया ने दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में अपना आर्थिक प्रभाव बढ़ाया और उनकी इस घुसपैठ के साथ ही दक्षिण पूर्व एशिया के भारत जैसे पारम्परिक मित्रों का प्रभाव इस क्षेत्र में कम हुआ।''[2]

इसके साथ ही कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ घटनाएँ सामने आयी, जिन्होंने भारत को 'निराशाजनक अवमूल्यन' से बचाया 1971 में बांग्लादेश मुक्ति में भारत ने अपने सैन्य बल का प्रदर्शन किया, हरित क्रांति की सफलता ने भारत को खाद्यानों के मामले में आत्मनिर्भर बनाया और उसके आत्म सम्मान को लौटाया इन सब बातों का मिला–जुला प्रभाव यह हुआ कि दक्षिण पूर्व एशिया के लिए यह असम्भव हो गया कि वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भ में भारत के अवहेलना कर सके।

1980 के दशक के दूसरे हिस्से में भारत की पुरानी आयात प्रतिस्थापन व निर्यात संवर्धन की नीति को व्यापार के हर तरह से प्रतिबंधों क्षेत्रों की वजह से आघात लगा और 1990 के दशक के आरम्भ में भारत दिवालियापन के कगार पर आ खड़ा हुआ था। इसी समय भारत अपनी आर्थिक नीति में बड़ा बदलाव लाता है। अब भारत व्यापार के उदारीकृत मूल्यों को अपनाने की सोचने लगा जो कि सोवियत संघ के टूटने से जरूरी हो गया। 1992 में नरसिंह राव ने पूर्व की ओर देखों नीति बनाई जिसे श्री वाजपेई ने 'ओपन स्काई' नीति बनाकर पूरे जोर से आगे बढ़ाई ताकि भारत के आसियान देशों से सम्बन्ध बेहतर हो सके। ओपन स्काई नीति भारत के महानगरों व दस आसियान देशों की राजधानियों के बीच परिपूर्ण समन्वय लाने के लिए प्रस्तुत की गई थी जो कि

भारत के शत्रु देशों की कूटनीति पर काफी प्रभाव डाल सकती थी। क्योंकि यह भारत आसियान के बीच एकता का संकेत है।''

''भारत की पूर्व की ओर देखो नीति केवल एक बाहरी आर्थिक नीति नहीं है, यह विश्व की प्रति भारत के दृष्टिकोण और उभरती वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के स्थान में एक रणनीतिक बदलाव भी है। सबसे अधिक यह दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया में हमारे सभ्यतागत पड़ोसियों तक पहुँचने के बारे में है।'' प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह

आसियान और भारत के बीच सहयोग के प्रमुख कारणों से सेवा क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व सफलता और पूर्व एशियाई देशों पर चीन का बढ़ता प्रभाव व दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में आंतकवाद का उदय चूंकि आतंकवाद नशीले दवाओं के अवैध व्यापार, काले धन को वैध बनाने व धार्मिक अतिवाद से निकटता से जुड़ा हुआ है और भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण आसियान देश भारत से सहयोग चाहते हैं। भारत की (स्ववा मेंज च्वसपबल) की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ रही है जो भारत और आसियान के बीच संबंधों की समीक्षा करती है। पहला भारत 1992 में क्षेत्रीय संवाद साझेदार की बजाय अब 1995 में आसियान सदस्यों द्वारा संचालित एशिया पैसिफिक में सुरक्षा सहयोग परिषद और आसियान प्रादेशिक कोरम के अन्तर्गत भारत की स्थिति ने उसे सुरक्षा सम्बन्धी यन... बहुपक्षीय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का दायित्व सौंपा दूसरे, भारत ने फलतः यह सुनिश्चित कर दिया है कि उसके सुरक्षा के मामले इन बहुपक्षीय समूहों की मान्यता से जुड़ें है। तीसरें वार्षिक रूप से भारत आसियान शिखर सम्मेलनों की मेजबानी का समझौता एक बहुत बड़ा कदम है क्योंकि इसके फलस्वरूप आसियान की वार्षिक प्रक्रियाओं में एक औपचारिक संरचना के रूप में संस्थानीकरण हो जाएगा। तीसरे व्यापार एक महत्वपूर्ण आयाम बन सकता है और भारत डब्ल्यू0टी0ओ0 की संरचना के भीतर विस्तृत आर्थिक संबंध बना सकता है तथा वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियाँ सुरक्षा पहले और शक्ति संतुलन के महत्व क्षेत्र में अपना वर्चस्व बनाए रखेंगे। प्रादेशिक संतुलन को बनाए रखने वाले महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में भारत की ओर आसियान की पश्चिम अभिमुख नीति ;स्ववापदह मेजद्ध आसियान राज्यों और चीन के दृष्टिकोण के बीच संतुलन बनाए रखेगी। हालांकि इस क्षेत्र के साथ चीन का व्यापक आर्थिक एकीकरण है परन्तु फिर भी भावी समय में इसकी राजनीतिक भूमिका को लेकर संशय है। इसका सबसे प्रतयक्ष उदाहरण स्प्रैटली द्वीप मामले से सम्बन्धित समझौता जिसमें चीन ने कहा कि कोई भी समझौता बिना पक्षपात के उसके हित में होना चाहिए या वियतनाम के साथ पैरासेल आइलैण्ड जांनसनरीफ मुद्दे पर टकराव। अतः चीन का आसियान के प्रति संशयपूर्ण रवैया भारत का लिए एक अवसर व चुनौती दोनों हैं।''[3]

यह एक नीतिबद्ध पहल है जो भारत के प्रशांत और एशिया क्षेत्रों तक फैला हुआ है और भारत को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों में बढ़ावा देने का कार्य करता है। इस पॉलिसी का आधुनिक संस्करण ''लुक ईस्ट पॉलिसी'' को माना जाता है। इस पॉलिसी को पूर्व प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिम्हा राव ने सन् 1991 में लागू किया था तथा इस पॉलिसी के अन्तर्गत क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तर पर व्यापार को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है और लोगों से लोगों के बीच संबंध को बढ़ाने के लिए भी इस पॉलिसी का प्रयोग किया जाता है। इसके पश्चात पी0एम0 नरेन्द्र मोदी की सरकार ने इस पॉलिसी को एक्ट ईस्ट पॉलिसी में परिवर्तित कर दिया।[4] इसकी शुरूआत नवम्बर 2014 में म्यांमार के पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में की गई थी।

भारत आसियान सहयोग का महत्व

आज विश्व राजनीति का गुरुत्व केन्द्र एशिया प्रशांत की ओर बढ़ रहा है भारत ने अपने पूर्व की ओर देखों नीति ऐसे रूपांकित की है कि भारत इस क्षेत्र की राजनीतिक को अपने राष्ट्रीय सरोकरों के अनुरूप गठन में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।''[5] भारत की पूर्व की ओर देखों नीति स्वभाव में बहुआयामी है। दक्षिण–पूर्व एशिया व एशिया प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक सहयोग के अलावा इस नीति के सामरिक व राजनीतिक पहलू भी बेहद महत्व के है। इस भूक्षेत्र में चीन एक ताकतवर प्रतिस्पर्धी है। वहीं भारत–चीन में कुछ सामान्य साझेहित भी है। दोनों तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएं है। दोनों विकास के लिए स्थायी वातावरण चाहते हैं व एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के खिलाफ एक स्वर में आवाज उठाते हैं। भारत का ताकत के रूप में उभरना व अमरीका का एशिया प्रशांति की ओर झुकाव चीन के लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण हैं और इसलिए वह अपने सैन्य ताकत के बल पर हवाई अड्डे, बंदरगाह, रेलवे तंत्र के रूप में अपनी आधारभूत संरचना के विकास से अन्य राज्यों को अभिभूत करना चाहता है। दूसरे ओर पूर्व की ओर देखों नीति का प्रमुख लक्ष्य है अमरीका की दक्षिण पूर्व एशिया व एशिया प्रशांत क्षेत्र में सैन्य श्रेष्ठता के साथ सामंजस्य बिठाना व चीन के प्रभाव को संतुलित रखना। यही सिद्धांत क्षेत्रीय सुरक्षा में भारत की भूमिका को भी प्रोत्साहित करती है। यद्यपि क्षेत्र में भारत की पहुँच है लेकिन अभी उसकी स्थिति अमरीका चीन, जापान की तुलना में कम प्रभावपूर्ण है।''

भारत–आसियान सहयोग के रास्ते–

- समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद और अंतर्राष्ट्रीय अपराध का मुकाबला करना और रोकना।
- सामूहिक विनाश के हथियारों, मानव तस्करी और छोटे हथियारों की तस्करी के प्रसार को रोकना।
- विश्वास निर्माण, संघर्ष निवारण और संकल्प।
- ऊर्जा और पर्यावरण संरक्षण।
- लोकतंत्र, मानवाधिकार, शांति, विकास और निरस्त्रीकरण को बढ़ाना देना, भारत–आसियान कार्यात्मक सहयोग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य और फार्मास्यूटिकल्स, अंतरिक्ष विज्ञान, कृषि, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, परिवहन और बुनियादी ढाँचा, पर्यटन और संस्कृति और लघु और मध्यम उद्यम आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग शामिल है।

चीन का प्रभुत्व और भारत की चिंता

चीन का जापान के साथ सेनकाकू आइलैण्ड विवाद, पैरासल द्वीप विवाद वियतनाम के साथ पिराचंकरीफ विवाद, फिलीपींस के साथ, इन मुद्दों के साथ, इन मुद्दों ने क्षेत्रों में तनाव का वातावरण बना रखा है।

ऐसी स्थिति में भारत का आसियान और पूर्वी देशों के साथ सम्बन्ध ने चीन के नाक में दम कर रखा है जिसके बदले में चीन भारत को उसको पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद में उलझाए रखना चाहता है। चीन कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान का पक्षपोषण करता रहता है।[6] चीन ने अपनी सैन्य क्षमता की उन्नतिकरण किया है जो हिन्दू महासागर तक पहुँच बना रहा है।

इन सबके बावजूद भारत की हिदं महासागर में भौगोलिक स्थिति प्राकृतिक बढ़त दिलाती है भारत का आसियान देशों के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक समरूपता होने से आसियान राष्ट्र सहानुभूतिपूर्ण के ओर नजदीकी रिश्ता महसूस करते हैं। इस कारण भारत धार्मिक एकरूपता की भावना को राजनीतिक सामरिक सहयोग में बदल सकता है।

भारत के आसियान पड़ोसियों के प्रति दृष्टिकोण

बांग्लोदश, म्यांमार और थाईलैण्ड ये तीन देश जिनके साथ हमारी भूमि एवं समुद्री सीमाएं मिलती हैं, वे एल0ई0पी0 ये थे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देखने वाली बात ये है कि ये तीनों देश

राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर रहे हैं जहाँ प्रायः पश्चिम लोकतंत्रीय मॉडल विफल होता दिखता है। यहीं पर भारत के विदेश नीति का व्यवहारिक पक्ष दिखता है। जहाँ थाईलैण्ड में थाकसीन शिवानात्रा का तख्ता पलट दिया गया वहीं बांग्लादेश में भी सैनिक शासन का अग्र इतिहास रहा है।'' भारत ने अपने विवेक का प्रयोग करते हुए थाईलैण्ड में सैनिक नियंत्रण पर कोई टिप्पणी नही की और वहाँ सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत राजतंत्र को महत्ता प्रदान की। यहाँ तक कि बांग्लादेश के संबंध में भी भारत के वक्तव्य वहाँ पर मौजूदा राजनीतिक शून्यता के प्रति वास्तविक चंता प्रकट करते हैं। 1988 में जब से म्यांमार में सैनिक शासन स्थापित हुआ है तब से यह देश पश्चिमी रोष का निशाना बन गया है। काफी व्यापक विचार–विमर्श के बाद म्यांमार के संबंध में नई दिल्ली की नीतियों ने दो तर्क प्रस्तुत किए सामान्य सीमा के साथ विद्रोहियों से निपटने के लिए सहयोग की आवश्यकता हैं तथा म्यांमार में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने की भी जरूरत है। हालांकि म्यांमार पर प्रतिबंध लागू करने की समकालीन पश्चिम नीतियों ने इस देश को दुर्भाग्यवश चीनी दायरे के निकट जाने को बाध्य कर दिया।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चा में स्पष्ट है कि भारत और आसियान देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में कोई बुनियादी संघर्ष नहीं है और क्षेत्रीय रणनीतिक पर्यावरण रक्षा सहयोग की उनकी साझा धारणाओं को देखते हुए भारत और आसियान देशों दोनों के लिए 21वीं सदी में अपने संबंधों को और मजबूत करने के लिए नए अवसर प्रदान करता है। अब जब भारत आसियान का शिखर सम्मेलन भागीदार बन गया है, तो यह शीर्ष नेतृत्व को अपने समकक्षों के साथ विचारों के आदान–प्रदान के लिए हर साल दक्षिण पूर्व एशिया का दौरा करने का अवसर प्रदान करता है। लुक ईस्ट पॉलिसी की तीन विशिष्ट विशेषताएँ हैं–एक, भारत एक बहुआयामी संबंध विकसित करने में कामयाब रहा है; दो, सफल रक्षा कूटनीति लागू की गई है; और तीन भारत क्षेत्रीय बहुपक्षवाद, सुरक्षा या आर्थिक में भाग लेने के खिलाफ नहीं है। दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में भारत की कनेक्टिविटी कूटनीति भी इसकी उत्साहजनक 'पूर्व की ओर देखों' नीति का प्रतिबिंब है। दक्षिण पूर्व एशिया में दूर–दराज के स्थानों से खुद को जोड़ने से न केवल भारत को इस क्षेत्र में एकीकृत करने में मदद मिलेगी, बल्कि इसे निर्णायक आर्थिक और रणनीतिक लाभ भी मिलेगा।[7]

भारत और पूर्वी देशों के आसियान के साथ संबंध फलने–फूलने, विकसित होने के अपार संभावना मौजूद है। खासकर आर्थिक तकनीकी और सामरिक दृष्टिकोण से जहाँ सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाएँ नैसर्गिक समीपता की स्थापना करते हैं। आज आसियान और पूर्वी एशिया के देश विश्व के आर्थिक विकास के इंजन बने हुए हैं यही नहीं पूर्वी एशियाई देश दक्षिण एशिया के गरीब देशों और भारत के समृद्धि में एक बेहतर भूमिका निभा सकते हैं। खासकर एक एशियाई बाजार विकसित कर यूरोपीय यूनियन और आसियान की भांति। ऐसी पूरी संभावना है कि एशिया के ये देश और भारत विकसित और मजबूत बाजार और कुशल जनसंख्या के बल पर विश्व अर्थव्यवस्था के केन्द्र बनने जा रहे हैं। ऐसे में भारत में आसियान और पूर्वी एशिया के देशों के साथ आर्थिक सहयोग और सामरिक साझेदारी को बढ़ावा देना समय की माँग है ऐसे में राजनीतिक साझेदारी और प्राचीनकाल से धार्मिक, सांस्कृतिक जुड़ाव भी मददगार होंगे। भारत को पूर्वी देशों के साथ सैन्य अभ्यास बढ़ाते हुए आर्थिक साझेदारी को गहन करना होगा ताकि चीन के दक्षिण प्रशांत और हिंद महासागर में बढ़ते प्रभुत्व की संतुलित किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. पंत, डॉ0 पुष्पेश, जैन, श्री पाल, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2019, पृ0–540।
2. वही, पृ0–150
3. विश्वाल, तपन, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मैकमिलन प्रकाशन, 2009, पृ0–107।
4. पंत, डॉ0 पुष्पेश, जैन, श्री पाल–अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2019, पृ0–155।
5. दत्त, वी0पी0, स्वतंत्र भारत की विदेशी नीति, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2014, पृ0–125
6. दत्त, वी0पी0, बदलती इण्डिया में भारत की विदेशी नीति भाग–2, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015, पृ0–128
7. कुमार, डॉ0 प्रमोद, आर्थिक–राजनीतिक लाभ हेतु भारत आसियान पुनः जुड़ाव वर्ल्ड फोकस जनवरी 2013 ैच्छ.2231. 0185 पृ0–28, 29।